International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 20-09-2020; Accepted: 05-09-2020; Published: 21-10-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 5; 2020; Page No. 73-75

अध्यापक और उनके जीवन संतुष्टि के बीच संबंधों का अध्ययन व उसका महत्त्व

रघुवर लाल
एम.ए., एमएड, व्याख्याता, श्याम बाबू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय संन्यास आश्रम, बिहार, भारत

सारांश
आज वर्तमान युग में अध्यापकों पर अत्यधिक कार्यभार होने के कारण उनकी जीवन संतुष्टि को जानना बहुत आवश्यक है क्योंकि अध्यापक ही भावी जगत का निर्माता होता है। वर्तमान युग में शिक्षकों का स्तर गिरता जा रहा है न शिक्षक पढ़ाना चाहते हैं और न ही विद्यार्थी पढ़ना चाहते है। आजकल अध्यापकों में सकारात्मक जीवन संतुष्टि का अभाव दिखाई पड़ता है। अध्यापकों के गिरते स्तर को ध्यान में रखते हुए अध्यापकों की जीवन संतुष्टि को जानने की आवश्यकता है।

मूल शब्दः अध्यापका, जीवन संतुष्टि, स्वास्थ्य व्यक्तिगत, आर्थिक वैवाहिक, सामाजिक नौकरी

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक मानवीकृत प्रक्रिया है। षिक्षा बालक की बुद्धि व विवेक में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और शिक्षा के द्वारा ही बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाया जाता है। शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। सच तो यह है कि षिक्षा से इतने लाभ हैं कि उनका वर्णन करना कठिन हैं। इस सन्दर्भ में यहाँ केवल इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है और पिता के समान उचित मार्ग दर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भाँति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा षिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

शिक्षा के द्वारा हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाने में अध्यापक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्यापक के द्वारा ही बालक में सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक गुण विकसित किये जाते हैं। बालकों को शिक्षा प्रदान करना अध्यापकों का सामाजिक उत्तरदायित्व होता है। इसलिए प्राचीन काल में अध्यापक द्वारा बालकों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी। परन्तु आज आधुनिक युग में शिक्षा का व्यावसायीकरण होने के कारण अध्यापकों को जितना वेतन प्रदान किया जाता है उससे वह पूर्ण रूप से संतुष्ट नही होते हैं और उनका संतुष्टि का स्तर बढ़ता रहता है। अध्यापकों में और पाने की इच्छा निरन्तर बनी रहती है। अध्यापक को जितना उनके पास है उसी से पूर्ण रूप से संतुष्ट होना चाहिए तभी वह अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकता है अन्यथा अपने जीवन में असंतुष्ट अध्यापक बालकों में उच्च आदर्श व नैतिक गुणों का विकास नहीं कर सकता है।

1.1 जीवन संतुष्टि

वर्तमान युग में जीवन संतुष्टि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। संतुष्टि के बिना व्यक्ति सुख व समृद्धिपूर्ण जीवन व्यतीत नहीं कर सकता है। जीवन संतुष्टि मनोविज्ञान व वातावरणीय जीवन परिस्थितियों से सम्बन्धित बहुआयामी प्रत्यय है तथा यह किसी व्यक्ति के अच्छे जीवन, जीवन की गुणवत्ता तथा आनन्द से सम्बन्धित है। विल्सन (1968) का विचार है कि यदि कोई व्यक्ति जीवन के सभी पहलुओं से संतुष्ट है तो वह पूरी तरह से खुश होगा।

एक ऐसा जीवन जिसके साधारण इच्छाओं की पूर्ति में संतुष्टि शामिल होती है और जो हमारे लिए अत्यधिक आनन्दमय होता है। ये इच्छायें अनेक व्यवहारिक क्रियाओं जो व्यक्ति के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष व्यवहारों से संबन्धित है अथवा वातावरण में जैसे सामाजिक, मानसिक व शारीरिक वातावरण से संबंधित है।

जीवन संतुष्टि में आनन्द प्राप्ति की क्षमता सम्मिलित होती है। जितना अधिक हम अपने जीवन में प्राप्त कर उससे खुश रहते हैं, उससे हमें अधिक संतुष्टि होती है। उच्च संतुष्टि वाले व्यक्ति से यह आशा होती है कि उसका जीवन के साथ सुखद समायोजन होगा तथा जिनका संतुष्टि स्तर कम है, उनका जीवन के साथ कम सुखद समायोजन होगा।

जीवन संतुष्टि स्वनिर्णय द्वारा जीवन की प्रसन्नता में मूल्यांकन से संबंधित है। जीवन संतुष्टि के दो पक्ष हैं– सकारात्मक पक्ष और नकारात्मक पक्ष। एक तरफ तो यह व्यक्ति के समायोजन व प्रगति के लिए आवश्यक है, परन्तु दूसरी तरफ यह प्रगति को रोकता भी है। यह ऐसा महत्वपूर्ण लक्ष्य है, जिसके लिए मानव अपने सम्पूर्ण जीवन काल में तरसता रहता है। एक व्यक्ति की जीवन संतुष्टि को प्रभावित करने वाले अनेक कारक हो सकते है। अध्ययन के आधार पर निम्न कारको को लिया गया है।

1.1.1 व्यक्ति की जीवन संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक

- स्वास्थ्य
- व्यक्तिगत
- आर्थिक
- वैवाहिक
- सामाजिक
- नौकरी।
- स्वास्थ्य संबंधी कारक

एक व्यक्ति की जीवन संतुष्टि उसकी स्वास्थ्य से निम्न प्रकार प्रभावित होती हैः

अगर उसके शरीर में किसी प्रकार का रोग होता है तो वह अपने कार्यों में ध्यान नहीं देता है।

अगर उसके शरीर की संरचना ठीक नहीं होती है तो अन्य की तुलना में वह अपने आप को हीन महसूस करता है।

शारीरिक अक्षमता होने के कारण व्यक्ति अपने कार्यों को ठीक

ढंग से नहीं कर पायेगा इससे उसकी जीवन संतुष्टि प्रभावित होती है।

व्यक्ति के साथ किसी प्रकार की दुर्घटना हो जाती है, उसका कोई अंग दुर्घटना होने के कारण अलग हो जाता है, जिससे उसकी कार्य क्षमता समाप्त हो जाती है।

इसके लिए सुकरात ने कहा भी है कि ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।'' अर्थात् जब हमारा शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ होता है तो हमारा मस्तिष्क भी पूर्ण रूप से स्वस्थ होता है। वह किसी समस्या से ग्रसित नहीं होता है और व्यक्ति अपने आप को पूर्ण संतुष्ट मानता है।

व्यक्तिगत कारक

एक व्यक्ति की जीवन संतुष्टि व्यक्तिगत कारकों पर भी निर्भर करती है। किसी व्यक्ति को उसकी रूचि या इच्छानुसार कार्य नहीं मिल पाता है। वह जाना किसी और व्यवसाय में चाहता है परन्तु चला किसी और व्यवसाय में जाता है तो व्यक्ति की उस व्यवसाय में रूचि न होने के कारण वह अपना पूर्ण योगदान उस कार्य या व्यवसाय में नहीं दे पाता है और अपना पूर्ण योगदान न देने के कारण उसे असंतुष्टि होती है।

एक व्यक्ति की जीवन संतुष्टि उसके दृष्टिकोण पर भी निर्भर करती है। अगर कोई व्यक्ति किसी चीज को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखता है तो उसका संतुष्टि स्तर ऊँचा होता है। अगर उसे नकारात्मक दृष्टिकोण से देखता है तो उसका संतुष्टि स्तर निम्न होता है।

व्यक्तिगत रूप से असंतुष्ट व्यक्ति अपनी समस्याओं में उलझे रहते हैं और इससे उनका व्यवहार चिड़चिड़ा हो जाता है जिससे उन्हें जीवन में निराशा उत्पन्न होती है। इस कारण वो पूर्ण संतुष्ट नहीं हो पाता है।

आर्थिक कारक

व्यक्ति के जीवन में आर्थिक कारक की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आर्थिक स्थिति–जब किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती है और अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए उसे धन कमाने की चिंता रात दिन लगी रहती है। जितना उसके पास है वो उससे संतुष्ट नहीं होता है।

आय–एक व्यक्ति की आय पर भी जीवन संतुष्टि निर्भर करती है। उसकी आय उसके काम के अनुसार कम होती है और अपनी आय कम होने के कारण वो अपने आप को असंतुष्ट मानता है।

आर्थिक स्तर– जब किसी व्यक्ति का आर्थिक स्तर या उसके रहन सहन का स्तर अन्य की तुलना में निम्न होता है और वो अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है और उसे जीवन में कठिन परिश्रम करना पड़ता है। इससे उसे अपने जीवन में संतुष्टि प्राप्त नहीं होती है।

कुछ व्यक्ति अत्यधिक अमीर होते हैं और कुछ व्यक्ति बहुत गरीब होते हैं। गरीब व्यक्ति अपनी रोजी रोटी कमाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है और अमीर व गरीब के बीच की खाई बढ़ती जाती है। अमीर व्यक्ति गरीब से घृणा करता है और इससे उन्हें पूर्ण संतुष्टि नहीं होती है।

वैवाहिक कारक

व्यक्ति की जीवन संतुष्टि में चौथा मुख्य कारक वैवाहिक कारक है। पति–पत्नी के बीच आपसी झगड़े, मनमुटाव व्यक्ति की जीवन संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। वे अपने आपसी झगड़े को निपटाने में लगे रहते हैं और इससे वो अपने जीवन में असंतुष्ट रहते हैं। परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम, सहानुभूति के न होने के कारण व्यक्ति अपने आप को परेशान सा महसूस करता है और असंतुष्ट रहता है। गृहस्थी के सही ढंग से न चलने के कारण पति–पत्नी के बीच झगड़े उत्पन्न होते हैं, दोनों के बीच आपसी झगड़े होने के कारण वो अपने जीवन में असंतुष्ट रहते हैं। अन्तर्जातीय विवाह होने के कारण षुरू में तो उनमें प्रेम का वातावरण बना रहता है और थोड़ा समय बीतने के बाद झगड़े उत्पन्न होने लगते हैं और इससे उन्हें जीवन में संतुष्टि नहीं होती है।

सामाजिक कारक

व्यक्ति की जीवन संतुष्टि में सामाजिक कारक बहुत महत्वपूर्ण है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी होता है और समाज में अपना उच्च स्थान पाना चाहता है। जब उसे समाज में वह स्थान नहीं मिलता जैसा वह चाहता है तो वह अपने जीवन में असंतुष्ट हो जाता है। समाज सामाजिक संबंधों का ताना–बाना है। इन संबंधों का व्यक्ति के व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है। समाज व्यक्ति पर नियन्त्रण करता है। रीति रिवाज, परम्पराओं एवं सामाजिक नियमों का व्यक्ति की जीवन शैली पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति समाज में रहकर मनमाना व्यवहार नहीं कर सकता। समाज के विरूद्ध कार्य करने पर समाज उसे दण्ड देता है। व्यक्ति को समाज के व्यवहारों के प्रतिमानों को अपनाना ही पड़ता है। समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इन नियमों का पालन करते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इन नियमों का पालन नहीं करते हैं जो इन नियमों का पालन नहीं करते हैं वे अनेक चिन्ताओं से ग्रसित रहते हैं, जिससे अपने आप को असंतुष्ट समझते हैं और जो इन नियमों का पालन करते हैं वो अधिक संतुष्ट होते हैं।

व्यक्ति समाज में अपनी उच्च प्रतिष्ठा चाहता है और समाज में व्यक्ति को अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तो उसे जीवन में अधिक संतुष्टि होती है और दूसरी ओर व्यक्ति को जीवन में उचित प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती है तो उसका संतुष्टि स्तर कम होगा अर्थात् वह पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं होगा।

नौकरी

व्यक्ति की रूचि, योग्यता, क्षमता के अनुरूप कोई व्यवसाय उसे प्राप्त नहीं होता है तो वह उस कार्य को सही ढ़ंग से नहीं कर पाता है और अपने जीवन में असंतुष्ट होता है। दूसरी ओर वह व्यक्ति होता है जिसे अपनी रूचि क्षमता के अनुसार कार्य मिलता है तो वह अपने कार्य को सुचारू रूप से करता है और उसे उस कार्य को करने से प्रगति के अवसर भी उपलब्ध होते हैं और उसकी जीवन में संतुष्टि के भाव अधिक होते हैं।

व्यक्ति के पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य नहीं होता है तो वह असंतुष्ट रहता है। व्यक्ति के पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

परिवार में घटित होने वाली घटनायें एवं समस्याएँ जिस प्रकार व्यावसायिक जीवन को प्रभावित करती है उसी व्यावसायिक क्षेत्र से सम्बन्धित सफलताएँ एवं असफलताएँ पारिवारिक जीवन पर प्रभाव डालती हैं। प्रायः यह देखने में आता है कि व्यक्ति अपने पारिवारिक जीवन में सुख व संतोष की अनुभूति करते हैं। वह व्यावसायिक जीवन को भी शांत, सौम्य एवं संतुलित ढंग से व्यतीत करते हैं और दूसरी तरफ जो व्यक्ति अपने पारिवारिक जीवन में सुख व संतोष की अनुभूति नहीं करते हैं वह व्यक्ति व्यावसायिक जीवन को भी संतुलित ढंग से व्यतीत नहीं कर पाता हैं। इससे वह असंतुष्ट रहता है।

अपने जीवन के विभिन्न पक्षों से जैसे सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, वैवाहिक कारकों से असंतुष्ट व्यक्ति अपना पूर्ण योगदान अपने कार्य को नहीं दे पाता है और अपने जीवन में असंतुष्ट रहता है।

1.2 अध्यापक और जीवन संतुष्टि का सम्बन्ध

अध्यापक को समाज का दर्पण कहा जाता है। अध्यापक में ही समाज का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। अध्यापक का समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। अगर अध्यापक समाज के सभी पहलुओं या आयामों जैसे सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत, वैवाहिक, नौकरी, आदि से संतुष्ट नहीं होगा तो वह अपना सम्पूर्ण योगदान समाज को नहीं दे सकेगा और अगर अध्यापक इन सभी पहलुओं से पूर्ण रूप से संतुष्ट होगा तो वह समाज को अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा। पूर्ण रूप से संतुश्ट अध्यापक ही विद्यार्थियों में उच्च आदर्श, नैतिक गुण, कर्तव्य परायणता की भावना, राष्ट्र के प्रति आदर भाव, नागरिकता की भावना का विकास आदि गुणों को विकसित करता है और अपने ही जीवन में असंतुष्ट अध्यापक इन गुणों को छात्रों में विकसित करने में असमर्थ रहते हैं। अपने ही जीवन से संतुष्ट अध्यापक अपनी नौकरी व परिवार के बीच उचित सामंजस्य स्थापित कर पाते हैं और असंतुष्ट अध्यापक ऐसा करने में असमर्थ रहते हैं। विद्यार्थी अपने अध्यापक के चरित्र और उनके गुणों से प्रभावित होकर ही इन गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करते हैं और उनके बताये गये मार्ग पर चलकर ही वह अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। अपने जीवन में संतुष्ट अध्यापक ही देश के लिए अच्छे नागरिक का निर्माण करते हैं जिससे वे नागरिक अपने देश को उन्नति के शिखर पर ले जाते हैं और देश निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ता रहता है। अपने ही जीवन में असंतुष्ट अध्यापक इन सब कार्य को भली प्रकार से नहीं कर पाते हैं और अपने ही जीवन की विभिन्न समस्याओं में उलझे रहते हैं। अध्यापक का अपने जीवन के सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत, वैवाहिक, नौकरी आदि सभी पहलुओं से पूर्ण रूप से संतुष्ट होना बहुत जरूरी है जिससे वे राष्ट्र का निरन्तर विकास कर सकें।

1.3 आवश्यकता एवं महत्व

प्रत्येक अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सर्वज्ञात है कि व्यक्ति के संतुष्ट होने का उसके व्यक्तित्व, कार्यक्षमता, निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रतियोगिता के युग में प्रत्येक व्यवसाय में भाग दौड़ की स्थिति है। इस होड़ के कारण संतुष्टि नाम का भाव कहीं खो गया है। प्रस्तुत शोध के आधार पर यही जानने का प्रयास किया जायेगा कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों में से किस प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों का जीवन संतुष्टि का स्तर उच्च है। किस प्रकार उच्च आकांक्षा स्तर एवं असीमित इच्छायें तथा उच्च आकांक्षा असंतुष्टि का कारण बनती है तथा व्यक्ति को अपनी ईहलीला समाप्त करने की स्थिति में ला खड़ी करती है। वर्तमान में खुदखशी के बढ़ने का कारण जीवन असंतुष्टि ही है। जीवन में संतुष्टि न मिलने के कारण शिक्षण व्यवसाय पूरे तरीके से व्यावसायिक बन गया है और शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। इसलिए हमें इसके अध्ययन की आवश्यकता है।

सरकारी विद्यालयो के अध्यापको और गैर सरकारी विद्यालयो के अध्यापको के वेतन उनके प्रशिक्षण कार्यभार व छात्रों की संरव्या में असमानता देरवने को मिलता है। इस कारण हो सकता है कि दोनो विद्यालयो के अध्यापको की जीवन संतुष्टि मे विभिन्नता है। जहॉ तक जीवन संतुष्टि पक्ष से संबंधित शोधों के अध्ययन का प्रष्न है। अधिकतम अध्ययन विदेशों में हुए हैं तथा बीमारों, विकलांगों, नर्सों, कार्यरत तथा सेवा निवृत व्यक्तियों से संबंधित है। शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग ''शिक्षक'' पूर्णतः उपेक्षित रहा है।

निष्कर्ष

भारत में शिक्षकों की जीवन संतुष्टि पर अध्ययन किये गये हैं जो अभी तक विकास की प्रक्रिया में है। वर्तमान युग में अध्यापकों पर अत्यधिक कार्यभार होने के कारण उनकी जीवन संतुष्टि को जानना बहुत आवश्यक है। क्योंकि अध्यापक ही भावी जगत का निर्माता होता है। वर्तमान युग में शिक्षकों का स्तर गिरता जा रहा है। न शिक्षक पढ़ाना चाहते हैं और नही विद्यार्थी पढ़ना चाहता है। आजकल अध्यापकों में सकारात्मक जीवन संतुष्टि का अभाव दिखाई पड़ता है अध्यापकों के गिरते स्तर को ध्यान में रखते हुए अध्यापकों की जीवन संतुष्टि को जानने की आवष्यकता है।

संदर्भ सूची

1. लाल रमन बिहारी (2007), ''भारतीय षिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं'', रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ, पेज नं0 32–36
2. सक्सेना एन ण्आर ण स्वरूप, चतुर्वेदी षिखा (2007), ''उदयीमान भारतीय समाज में षिक्षक'', आर ण्लाल बुक डिपो, मेरठ पेज नं01
3. शर्मा आर. ए. (2005), ''शिक्षा अनुसंधान'' आर। लाल किताब डिपो, मेरठ, पीपी 99–121
4. मूरजनी जे.डी. और गेरानी ममता (2004), ''कॉलेज स्टूडेंट्स के जीवन संतोष और सामान्य अध्ययन का एक अध्ययन ब्वससमहम ख्साइको–लिंगू, साइको–भाषाई एसोसिएशन इंडिया (पीएलएआई), आगरा। वोल्वो.34 (1) पीपी .66–70
5. रस्तोगिरिनु, दवे वंदना (2004), ''सेवानिवृत्त कर्मचारियों में जीवन संतुष्टि'', इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन। इंडियन साइकोमेट्रिक एंड एडकेशनल रिसर्च एसोसिएशन पटना। खंड .35 (2) पीपी.112–117।
6. बख्शी आरती, कुमार कुलदीप, शर्मा शल्लू और शर्मा अंबिला (2008), "जीवन संतुष्टि के रूप में नौकरी से संतुष्टि, सरकार और प्रा। में व्याख्याताओं पर एक अध्ययन से संतुष्टि। जम्मू में कॉलेज '', साइको की प्राची जर्नलः सांस्कृतिक आयाम। चरखी साइको कल्चरल रिसर्च एसोसिएशन मेयर विहार, मेरठ, खंड .24 (2) पीपी .174–188
7. कौल, लोकेश (2005), ''मेथोलॉजी ऑफ एजुकेशन रिसर्च'', विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा। लिमिटेड, नई दिल्ली, पीपी . 91–92
8. रानी सी. शोभा और देवी एम. शारदा (2007), ''विवाहित कामकाजी और गैर–कामकाजी महिलाओं की जीवन संतुष्टि, मानसिक–सांस्कृतिक आयामों की प्राची जर्नल, वॉल्यूम 23 (2) पीपी 153–159
9. अहमद अनीस, अहमद फुजैल, ''वृद्ध विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के जीवन की संतुष्टि, सामुदायिक मार्गदर्शन और अनुसंधान के जर्नल, नील कमल प्रकाशन हैदराबाद, वॉल्यूम 26 नंबर 3 पीपी 311–318
10. दास इरा, और सत्सगी अर्चना (2007)ए ''लाइफ सैटिस्फैक्शन के निर्धारक के रूप में आयु'' इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन। शिप्रा प्रकाशन शकरपुर वॉल्यूम – 38 (आई), पीपी। 63–66।
11. सूक डॉ. रंजेंदर (2009), ''शिक्षक की जीवन संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक'' एडू ट्रैक, नील कमल पब्लिकेशन प्रा। लिमिटेड सुल्तान बाजार, हैदराबाद वॉल्यूम –9 नंबर (1) पीपी। 37–41
12. गुप्ता नीता और जोशी रेणुका (2009), ''साइकोलिंगुआ'', साइको–भाषा विज्ञान एसोसिएशन ऑफ इंडिया, वॉल्यूम 39 (1), पीपी 45–48